भाग द

(खेलों का सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक महत्व)

अध्याय-1

भारत में शारीरिक शिक्षा व खेल प्रशिक्षण संस्थान तथा व्यवसायिक क्षेत्र

(Physical Education & Sports Coaching Institutions and Professional Avenues)

विषय वस्तु (Syllabus)

12-1 भारत में प्रमुख शारीरिक शिक्षा व खेल प्रशिक्षण संस्थानों की जानकारी प्राप्त करना व व्यावसायिक क्षेत्रों में खिलाड़ियों के स्थानों के निर्धारण की समझना।

उद्देश्य (Objectives)

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप समर्थ होंगे-

12.1 भारत के व्यावसायिक कॉलेज/ संस्था/ यूनिवर्सिटीज

12.2 भारतीय खेल प्राधिकरण एवं इसके कार्यों की जानकारी।

12.3 व्यावसायिक तैयारी में सम्मिलित होने के समझ।

सन् 1947 ई. में भारत को स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् यह बात निश्चित हो गई कि भारत के नागरिकों के लिये स्वास्थ्य एवं शारीरिक निपुणता की अत्यन्त आवश्यकता है और यह महसूस किया कि इस आवश्यकता को शारीरिक शिक्षा व खेलों द्वारा विकसित किया जा सकता है। शारीरिक शिक्षा व खेलों के विकास हेतु भारत सरकार द्वारा बनाई गई विभिन्न समितियों की अनुशंषा पर शारीरिक शिक्षा शिक्षक व विभिन्न खेलों में प्रशिक्षक तैयार करने के लिये राष्ट्रीय स्तर की शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की गई, वैसे तो भारत के प्रत्येक प्रान्त में शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों में उन सभी प्रकार की सुविधाएं स्थापित की गई है परन्तु प्रमुख संस्थाऐं भारत में खेलों के स्तर को भी प्रभावित कर रही है वे निम्न हैं। वे संस्थाएं हैं -

नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेल संस्था पटियाला (N. S. N. I. S. Patiala) - 1958 ई. में भारत के खेलों में लगातार गिरते हुये स्तर के कारणों का पता लगाने के लिये सरकार ने पटियाला के महाराज यादविंदर सिंह की अध्यक्षता में एक खेलकूद तदर्थ जांच समिति बनाई, जिसने अनुसंधान के पश्चात् सन् 1959 में अपनी रिपोर्ट सरकार को दी,, इस रिपोर्ट की प्रमुख सिफारिशों में एक राष्ट्रीय खेल संस्था का निर्माण, प्रशिक्षकों के लिये अनिवार्य रूप से किया जाये ताकि विभिन्न खेलों में प्रशिक्षक तैयार किये जा सके।

इस तदर्थ जांच समिति की सिफारिशों के परिणाम स्वरूप सन् 1961 ई. में श्री के.एल. माली द्वारा मोतीबाग, पटियाला (पंजाब) में राष्ट्रीय खेल संस्थान (एन.आई.एस.) जिसका नामकरण बाद में नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेल संस्था कर दिया, के नाम से एक राष्ट्रीय खेल संस्था की स्थापना की गई। जिसका उद्देश्य विभिन्न खेलों के विशेषज्ञ या कुशल प्रशिक्षक तैयार करना, खेल प्रतिभाओं के साथ-साथ विभिन्न खेल संस्थाओं में राष्ट्रीय स्तर पर सामंजस्य स्थापित करने का कार्य करती है। यह संस्था खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को छात्रवृत्ति देती है। सन् 1974 में इसकी एक शाखा बंगलोर में खोली गई। इसके बाद, गांधी नगर, कलकत्ता व औरंगाबाद में भी इसकी शाखाएं खोली गई। इस संस्था में निम्न पाठ्य क्रम चलाये जाते हैं-

(1) सभी खेलों में एक वर्षीय डिप्लोमा इन कोचिंग

(2) एम.एस. मास्टर ऑफ स्पोर्टस (दो वर्षीय)।

(3) ओरिन्टेशन कोर्स (छः सप्ताह) नौकरी करने वालों के लिये, विशेषत शिक्षकों के लिये।

(4) डिप्लोमा कोर्स इन स्पोर्टस मैडिसन (दो वर्षीय)।

लक्ष्मी बाई नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ फिजीकल एज्यूकेशन (L.N.U.P.E, Gwalior)

सन् 1956 में केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड शारीरिक शिक्षा ने भारत में भारतीय शारीरिक गतिविधियों के विकास व लोकप्रियता के लिये शारीरिक शिक्षा व मनोरंजन के लिये एक राट्रीय योजना तैयार की थी। जिसके तहत 1957 में शिक्षा मन्त्रालय ने ग्वालियर (मध्यप्रदेश) में शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय स्थापित किया जिसमें बी.पी.ई. (बैचलर इन फिजिकल एजूकेशन) (तीन वर्षीय) पाठ्यक्रम शुरू किया गया ताकि शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में शारीरिक शिक्षक तैयार किये जा सकें। बाद में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम एम.पी.ई. (मास्टर ऑफ फिजिकल एजूकेशन) (दो वर्षीय) शारीरिक शिक्षा में शुरू किया गया। महाविद्यालय का नाम झांसी की महान् रानी जो भारत की आजादी की लड़ाई की वीरांगना (नायिका) थी - के नाम से लक्ष्मीबाई कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन, (L.C.P.E) रखा। महाविद्यालय का नाम एल.एन.सी.पी.ई. (L.N.C.P.E.) लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर (मध्यप्रदेश) किया गया। सन् 2009 में संस्थान को राष्ट्रीय विश्वविद्यालय (शारीरिक शिक्षा) का दर्जा प्राप्त हुआ एवं संस्थान का नाम लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा विश्वविद्यालय (L.N.U.P.E.) हो गया। वर्तमान में संस्था में बी.पी.एड (चतुर्थ वर्षीय), एम.पी.एड, एम.फिल एवं पी.एच.डी. के साथ शारीरिक शिक्षा, खेल व खेल विज्ञान से जुड़े अनेकों पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

वाई.एम.सी.ए मद्रास (Y.M.C.A. Madras)

भारत में स्वतन्त्रता से पूर्व शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम पूर्व सैनिकों को नियुक्ति देकर स्कूलों में चलाये जाते थे। वे स्कूलों में बच्चों को मिलट्री ड्रिल एवं पी.टी. की कसरतों के अलावा विद्यालय के निरीक्षण व समारोहों में स्काउट के लिये तैयार करते थे, भारत में स्वतन्त्रता के पूर्व वैज्ञानिक शारीरिक शिक्षा में उच्चतम विकास का श्रेय वाई.एम.सी.ए. कॉलेज ऑफ फिजीकल एजुकेशन मद्रास को जाता है जिसकी स्थापना 1920 में मद्रास में श्री एच.सी. बक ने की। यहाँ से उत्तीर्ण छात्रों ने स्कूलों में पूर्व सैनिकों की जगह ली। धीरे-धीरे स्कूलों में, समाज में शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों के अर्थों को नया रूप मिला तथा बास्केटबाल व बालीबाल जिनका जन्म अमेरिका में हुआ, Y.M.C.A. के प्रयासों से भारत में विकसित हुए। यह महाविद्यालय भारत में शारीरिक शिक्षा के लिए कार्यरत हैं।

हनुमान व्यायाम प्रसारक मंडल, अमरावती (Hanuman Vyam Prasark Mandal, Amrawati)

1914 में विंध्या भाईयों ने सर हनुमान व्यायाम प्रसारक मण्डल अमरावती की बुनियाद रखी, जो भारत में शारीरिक शिक्षा के लिये कार्य करने लगी। 1924 में इस संस्था ने नौजवान पुरुषों व महिलाओं के लिये भारतीय गतिविधियों के प्रशिक्षण के लिये पांच सप्ताह का ग्रीष्म पाठ्यक्रम शुरू किया। जिन नौजवानों ने यह पाठ्यक्रम पूरा किया उन्हें व्यायाम विशारद (Vayayam Vishard) के पंचाट प्रदान किये। यहाँ 1946 में अखिल भारतीय शारीरिक शिक्षा सम्मेलन के समय भारत में राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा एवं मनोरंजन संघ बनाया गया। मण्डल के दल ने यूरोप व मध्य में व 1936 के बर्लिन एशिया व ओलम्पिक खेलों में व 1949 में वी. द्वितीय लिगड स्टोकहोल्म में भारतीय गतिविधियों का प्रदर्शन किया। इस समय संस्था में बी.पी.ई. (तीन वर्षीय), वी.पी.एड. (एक वर्षीय), एम.पी.एड. (दो वर्षीय), पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं, भारतीय खेल खो-खो, कबड्डी व अटपटया के नियम की प्रमाणिकता भी अखिल महाराष्ट्र शारीरिक शिक्षा मण्डल द्वारा ली गई।

लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा कॉलेज त्रिवेन्द्रम (केरल) (L.N.C.P.E. Trivandrm (Kerala))

लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा कॉलेज त्रिवेन्द्रम (केरल) को 1985 ई. में शुरू किया गया। यहां पर बी.पी.ई. (तीन वर्षीय पाठ्यक्रम) तथा एम.पी.ई. (दो वर्षीय) पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं। यह राष्ट्रीय संस्थान भारतीय खेल प्राधिकरण से सम्बन्धित है। शोध कार्य भी इस संस्था में होता है। डॉ. जयन्त मुर्खजी. व डॉ. एम.एल. कमलेश इसके प्राचार्य रह चुके हैं। शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में विकास के लिये इस राष्ट्रीय स्तर की संस्थान का समय-समय पर पूर्ण योगदान रहा है।

भारतीय खेल प्राधिकरण (Sports Authority of India)

नवें एशियन खेल जो दिल्ली में सन् 1982 में आयोजित हुए थे के सफल आयोजन के बाद भारतीय खेल प्राधिकरण का पंजीकरण स्थापना प्रस्ताव संख्या 1-1/83 साई दिनांक 25.01.84 खेल विभाग भारत सरकार द्वारा हुआ। इसका उद्देश्य देश में खेलों की उन्नति व 9 वें एशियन खेलों के दौरान बने स्टेडियमों के रख-रखाव व उपयोग की जिम्मेदारी दी गई। राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा सोसायटी (सनाईपीस) (Society for National Institute of Physical Education & Sports) का मई 1987 से साई में विलय हो गया, व साई देश में खेलों की उन्नति के लिये एक उच्च शासकीय निकाय बन गया। भारत के माननीय प्रधानमन्त्री भारतीय खेल प्राधिकारण की साधारण समिति के पदेन अध्यक्ष होते हैं। मानव संसाधन विकास व युवा मामले एवं खेल के केन्द्रीय मंत्री साधारण समिति के उपाध्यक्ष व शासी निकाय के अध्यक्ष होते हैं। भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) का सचिव सधारण समिति व शासी निकाय का सदस्य सचिव होता है। सधारण सभा में 43 सदस्य होते हैं जिनमें 16 पदेन सदस्य व 27 सदस्य भारत सरकार द्वारा विभिन्न श्रेणियों से नामजद किये जाते हैं। शासी निकाय में 28 सदस्यों में से 16

भारत सरकार द्वारा नामजद किये जाते हैं व 12 पदेन सदस्य होते हैं।

भारतीय खेल प्राधिकरण के कार्य (Functions of Sports Authority of India)

सामान्यत: जरूरत के मुताबिक सिर्फ चार विंग-शैक्षणिक, परिचालन, स्टेडिया व टीम विंग ही कार्य करती हैं।

1. **शैक्षणिक विंग** - इसके अन्तर्गत खेल से सम्बन्धित पाठ्यक्रम नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेल संस्था पटियाला, बैंगलोर, गांधीनगर (गुजरात) में विभिन्न खेलों के प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिये व लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय कॉलेज शारीरिक शिक्षा त्रिवेन्द्रम (केरल) में शारीरिक शिक्षा के शिक्षकों के लिये विभिन्न पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं।
2. **परिचालन विंग** - इसके अन्तर्गत शिक्षा के क्षेत्र में खेल विकास निदेशालय व विशिष्ट क्षेत्रीय खेल एवं खेल सुविधाओं का विकास आता है। जिसका कार्य विभिन्न आयु समूह के नौजवान प्रतिभाशाली बचों को विभिन्न योजनाओं द्वारा खोजना व प्रशिक्षित करना है।
3. **स्टेडिया विंग** - 9 वें एशियन खेलों के दौरान 1982 में बने स्टेडियमों जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम, राष्ट्रीय स्टेडियम (वर्तमान में सुभाष चन्द्र स्टेडियम), तालकटोरा तरणताल, साइकलिंग वेलोड्रम, इन्द्रा गांधी स्टेडियम व डॉ. करणीसिंह शूटिंग रेंज के रख-रखाव व उपयोग की जिम्मेदारी है।
4. **टीम विंग** - इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय टीमों का प्रशिक्षण, विदेशी प्रशिक्षकों का निमन्त्रण प्रशिक्षणरत टीमों के रहने, खाने व खेल सामग्री की सुविधायें प्रदान करना, इसके अलावा जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में खिलाड़ियों द्वारा नशीली दवाईयों के उपयोग पर नियन्त्रण के लिये प्रयोगशाला की व्यवस्था करना आता है।

भारतीय खेल प्राधिकरण के उद्देश्य -

(1) भारत सरकार की खेल नीतियों के अनुसार देश के खेल स्तर को बढ़ाने के लिये योजना बनाना व उन्हें लागू करना।

(2) देश में खेलों के प्रोत्साहन व सुधार के लिये कार्य करना।

(3) खेल व सम्बन्धित विज्ञानों में शोध को बढ़ावा देना।

(4) दिल्ली व देश के अन्य भागों में खेल की उपयोगी ढांचागत सुविधायें जुटाना।

(5) अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं, प्रशिक्षण शिविर, प्रदर्शन मैच व अन्य खेल गतिविधियों के लिये सुविधायें जुटाना व उन्हें आयोजित करना।

(6) खेल संस्थाओं व नये संस्थानों को स्थापित करना।

(7) राज्य सरकारों से सहयोग व तालमेल करना।

(8) खेलों व अन्य मामलों पर संगोष्ठियाँ व सम्मेलन आदि करवाना।

(9) खेलों से सम्बन्धित पत्रिकाएं व साहित्य के प्रकाशन का काम करना, प्रायोजित कर उत्साहित करना।

(10) खेलों के लिये बड़े पुरस्कार, सम्मान व छात्र वृत्तियां की पेशकश व उन्हें लागू करना।

(11) देश में खेल उपकरणों के बारे में शोध के लिये पहल करना, प्रायोजित कर उत्साहित करना।

व्यवसायिक क्षेत्र

खेलों में भाग लेना सिर्फ मनोरंजन ही नहीं है बल्कि खिलाड़ी खेल के माध्यम से जीविकोपार्जन कर जीवन पर्यन्त लाभ उठा सकता है। सन् 2011 में राजस्थान सरकार द्वारा खिलाड़ियों को राष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेताओं को प्रोत्साहित राशि- व्यक्तिगत स्पर्धा में प्रथम आने पर तीन लाख, द्वितीय आने पर दो लाख एवं तृतीय आने पर एक लाख रुपए देने की घोषणा की है। साथ ही टीम स्पर्धा में भी अनेकों प्रोत्साहित राशि सुनिश्चित कर राज्य स्तर के खिलाड़ियों को अव्वल दर्जा दिलाने की दिशा में अग्रसर है। एक खिलाड़ी जिला स्तर, राज्य स्तर, राष्ट्रीय स्तर व अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर भाग लेकर व श्रेष्ठता प्राप्त कर अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहां वह सरकारी व अर्ध सरकारी नियुक्ति प्राप्त कर अपने जीवन के कैरियर का निर्माण कर सकता है जैसे - डाक तार विभाग, ए जी कार्यालय, रेल्वे में अनेक विभागों में, राज्यों की पुलिस कुछ प्राईवेट क्षेत्रों जैसे सहारा इंडिया, टाटा समूह, श्रीराम रेयन्स आदि तथा बी.एस.एफ, एयर इंडिया, सेना (तीनो विंग) तथा अन्य कई विभागों में खिलाड़ियों की सीधी भर्ती होती है जो कि विभिन्न समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर की जाती है। उनमें खेल अनुसार रिक्तियां निकाली जाती हैं व नियुक्तियां दी जाती हैं। जिसको स्पोर्ट्स कोटा (खेल आरक्षण) कहते हैं।

विद्यालय स्तर पर प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के लिए क्रमश: तृतीय श्रेणी, द्वितीय श्रेणी व प्रथम श्रेणी शारीरिक

शिक्षा शिक्षक के पद स्वीकृत हैं। उच्च शिक्षा के अधीनस्थ सभी प्रकार के कला, वाणिज्य, विज्ञान, इंजीनियरिंग, मेडिकल एवं अन्य सभी महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में सहायक निदेशक, उपनिदेशक एवं निदेशक शारीरिक शिक्षा (छठे वेतन आयोग के अनुसार) के पद स्वीकृत हैं। शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय के विभागों में असिसटेंट प्रोफेसर, एसोसियेट प्रोफेसर एवं प्रोफेसर के पद स्वीकृत हैं।

खेल प्रशिक्षण संस्थाओं से प्रशिक्षित खिलाड़ियों को राज्य खेल परिषदों व भारतीय खेल प्राधिकरण खेल संघों की आवासीय एकेडमी में प्रशिक्षक के पद पर कार्य करने के अवसर मिल रहे हैं।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेल संस्था पटियाला (पंजाब) में है जो कि विभिन्न खेलों के प्रशिक्षक तैयार करती है इसके चार केन्द्र और भी शुरू कर दिये हैं।
2. भारत में समस्त खेलों की उन्नति के लिए व समग्र विकास के लिए भारतीय खेल प्राधिकरण की स्थापना की गई है।
3. एल.एन.यू.पी.ई., ग्वालियर की स्थापना भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा शारीरिक शिक्षा के शिक्षकों को तैयार करने हेतु की गई। जहां अभी बी.पी.एड, (चार वर्षीय) एम.पी.एड., एम. फिल व पी.एच.डी एवं अन्य कई पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं।
4. खेल एक व्यावसाय के रूप में जीविकोपार्जन में भी सहायक होता है। विभिन्न विभागों में खिलाड़ियों की सीधी भर्ती होती है।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न

1. भारत में सन् 1961 में राष्ट्रीय खेल संस्थान की स्थापना जिस शहर में की गई, वह है –
   (अ) मद्रास (ब) दिल्ली
   (स) बैंगलोर (द) पटियाला ( )
2. भारत में समस्त खेलों की उन्नित के लिए एक उच्चशासकीय निकाय है–
   (अ) हनुमान व्यायाम प्रसारक मंडल
   (ब) वाई. एम. सी. ए
   (स) भारतीय खेल प्राधिकरण (साई)
   (द) एल. एन. सी. पी. ई. ( )
3. एक खिलाड़ी को रोजगार मिल सकता है; वह विभाग है –
   (अ) शिक्षा, पुलिस व बैंक (ब) रेल्वे, सहारा इंडिया व टाटा समूह
   (स) सेना, ए.जी. व पी एण्ड टी (द) उपरोक्त सभी ( )

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. वाई.एम.सी.ए. मद्रास की स्थापना किसके द्वारा व कब की गई?
2. एल.एन.सी.पी.ई. ग्वालियर कौन–कौन से कोर्स चलाता है?
3. हनुमान व्यायाम प्रसारक मंडल किस जगह है?
4. साई का पूरा नाम क्या है?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. भारत के प्रमुख शारीरिक शिक्षा व खेल प्रशिक्षण संस्थानों का वर्णन करो।
2. खेल एवं शारीरिक शिक्षा से रोजगार कैसे व कहां मिल सकता है? समझाइये।

प्रोजेक्ट वर्क (Project Work)

राजस्थान के विभिन्न शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय पर एक प्रोजेक्ट तैयार करो।

संकेत (Hints) :

(i) इस अध्याय से मदद लें।

(ii) शारीरिक शिक्षक से मदद लें।

केस स्टडी (Case Study)

शारीरिक शिक्षा प्रदान करने वाले महाविद्यालय/ विश्वविद्यालय पर एक केस स्टडी तैयार करो।

संकेत (Hints) :

(i) शारीरिक शिक्षक से पूछताछ करें।

(ii) व्यावसायिक व्यक्तियों से सलाह करें।

(iii) पुस्तक और पत्रिकाओं से सूचना इकट्ठी करने की कोशिश करें।

(iv) विभिन्न महाविद्यालय के शारीरिक शिक्षा निदेशकों से मिलें।

उत्तरमाला

1. द 2. स 3. द

डॉ. करणी सिंह

खेल :– निशानेबाजी

जीवन परिचय :– 21 अप्रैल, 1924 को बीकानेर में जन्म, दादा महाराजा गंगासिंह से निशानेबाजी की शिक्षा मिली।

उपलब्धियां :– एशियाई निशानेबाजी प्रतियोगिता (1971) मे स्वर्ण, विश्व निशानेबाजी प्रतियोगिता (1961) में रजत, क्ले पिजन नेशनल चैम्पियनशिप विजेता (1960)।

पुरस्कार एवं सम्मान :– 1961 में प्रारम्भ हुए अर्जुन पुरस्कार के प्रथम विजेताओं में से एक।

अध्याय-2

ओलम्पिक व एशियन खेल
(Olympic & Asian Games)

विषय वस्तु (Syllabus)

13-1 ओलम्पिक व एशियाड के इतिहास एवं उद्देश्यों को जानना।

उद्देश्य (Objectives)

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप समर्थ होंगे-

13.1 एशियाई खेलों के इतिहास की जानकारी।

13.2 प्राचीन एवं आधुनिक ओलम्पिक खेलों का लक्ष्य।

13.3 ओलम्पिक का आदर्श वाक्य का ज्ञान।

सम्बन्धित पद (Relevant Terms)

- **ओलम्पिक भावना:** विश्व के युवाओं में ओलम्पिक भावना को प्रोत्साहित करना।
- **ओलम्पिक आदर्श:** ओलम्पिक में जरूरी बात विजय प्राप्त करना नहीं, इसमें भाग लेना आवश्यक है, जीवन में सबसे बड़ी बात विजय नहीं परन्तु संघर्ष है।
- **ओलम्पिक आदर्श वाक्य:** ओलम्पिक का आदर्श वाक्य है- सबसे तेज, सबसे अच्छा और सबसे शक्तिशाली
- **ओलम्पिक ध्वज:** ओलम्पिक ध्वज दो तरह के होते हैं- (1)ओलम्पिक ध्वज (2)ओलम्पिक समारोह ध्वज

ओलम्पिक खेलों (Olympic games)

इतिहास (History)

विश्वभर में कौनसा देश खेल क्षेत्र में अग्रणी है? किस देश के खिलाड़ी अथक परिश्रम कर निष्ठा व समर्पित भाव से खेलों में भाग लेकर खेल के उच्च स्तर को प्राप्त करते हैं? व संसार में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करते हैं? यह जानकारी अधिकृत प्रतियोगिताओं के आयोजन से ही प्राप्त की जा सकती है? ऐसी ही मान्य प्रतियोगिताओं में विश्व स्तर पर ओलम्पिक एवं एशिया महाद्वीप स्तर पर एशियाड खेल हैं।

यूनान विज्ञान, दर्शन, खेल व शारीरिक शिक्षा में अग्रणीय रहा है। स्पोर्टस यूनान की खोज है। इतिहास इसका गवाह है कि मनुष्य कठिन परिस्थितियों में भी कुछ समय खेलों में मनोरंजन के लिये निकालता रहा है। जैसे शिकार कौशल, युद्ध की तैयारी, क्रोधी भगवान को खुश करने के लिये। ताम्रकाल में ग्रीस के लोगों की रुचि का पता चलता है। जैसे कुश्ती, तीरन्दाजी, दौड़ें, कूदना व मुक्केबाजी। ग्रीस के बहुत से शहरों में ऐथलेटिक्स उत्सव मनाये जाते थे। जिनमें सबसे प्रसिद्ध ओलम्पिक था। यह भगवान जियस के सामने मनाया जाता था।

प्राचीन ओलम्पिक खेल (Ancient Olympic Games)

यूनानी राष्ट्रीय खेल उत्सवों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण ओलम्पिक खेल थे। इन खेलों का आरम्भ 776 ई. पू. में हुआ था। ओलम्पिक खेलों के प्रारम्भ होने के बारे में अनेक किवदंतियां हैं। जीयस देवता ने क्रोनोस देवता पर विजय पाने के उपलक्ष्य में खेलों का आयोजन किया गया था।

खेलों से पहले युद्ध बन्द कर दिये जाते थे। आपसी वैचारिक विभेदों को भुला कर प्रतियोगी एक महीना पहले ओलम्पिक गाँव में निर्णायकों के सामने आ जाते थे। चन्द्रमा की पूर्णिमा से दो दिन पहले सभी खिलाड़ी एक जुलूस के रूप में ओलम्पिक गाँव की ओर चल पड़ते थे। एथलीट नंगे भाग लेते थे। इसमें पुरुष ही भाग ले सकते थे। वेरा महोत्सव में महिलाओं के लिये अलग से प्रतियोगिताएं होती थी। सन् 776 ई. में प्रथम ओलम्पिक खेल अभिलेखों के अनुसार पैदल दौड़ में कोरोबस नामक व्यक्ति ने विजय प्राप्त की। इसे ओलम्पिया के नीमच देवता के मन्दिर के पवित्र कुंजा के लगे जैतून के वृक्षों की टहनियों व पत्तियों से बनाये मुकुट से कोरोबस को सम्मानित किया।

ये खेल चार वर्ष में एक बार होते थे। परन्तु 394 ई. में रोम के सम्राट थियोडोसियस प्रथम ने राज्य आदेश जारी करके इन खेलों को

स्थगित कर दिया। 426 ई. में थियोडोसियस II के आदेश से ओलम्पिक खेलों के लिये बने भवनों व स्टेडियम की दीवारों को तोड़ने के आदेश दिये।

आधुनिक ओलम्पिक खेल (Modern Olympic Games)

आधुनिक ओलम्पिक खेलों को पुनः आरम्भ करने का श्रेय फ्रांस के शिक्षाविद् बैरन पेयरी डी कोबरटिन को जाता है। कोबरटिन ने राजनीति शास्त्र का अध्ययन शुरू किया। इसमें शिक्षा, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार करने की प्रबल प्रवृत्ति उनमें पैदा हुई। इस अध्ययन से कोबरटिन के मन में विचार आया कि राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विवादों को सुलझा कर आपसी सद्भावना पैदा करने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि खेलों के मैदान में मैत्रीपूर्ण मुकाबलों के लिये उनको एकत्र किया जाये। प्राचीन ओलम्पिक खेलों के विश्वव्यापी आधार पर दोबारा शुरू करने की कल्पना कोबरटिन ने की। आधुनिक औलम्पिक खेलों की शुरूआत के मुख्य कारणों में 1870 फेंको-प्रशियन युद्ध में फ्रांस की हार, पुश्तों कि गिरती शारीरिक स्थिति, ग्रीस प्राचीन दर्शन, व उनकी जीवन शैली व पुरातत्व नेताओं द्वारा इस नगर की खुदाई में मिले अनेक प्राचीन अवशेष, जो कि औलम्पिया के तत्कालीन महत्व के प्रत्यक्षदर्शी थे। इससे प्राप्त अवशेषों में विश्व के लोगों में ओलम्पिक के प्रति रुचि जाग्रत हुई।

कोबरटिन पक्के इरादे वाला व्यक्तित्व था। इस दिशा में अपने कदम बढ़ाता रहा। फलस्वरूप 16 जून 1894 को पैरिस में फ्रांसीसी खेल संघ द्वारा एक अन्तर्राष्ट्रीय एथलेटिक्स कांग्रेस के सामने ओलम्पिक खेलों की योजना रखी गई। जिसमें 15 देशों के 79 प्रतिनिधि व 49 खेल संघों ने भाग लिया। सर्वसम्मति से खेल को पुनः शुरू करने में सहयोग दिया।

1896 में ऐथेन्स में प्रथम ओलम्पिक खेल को सच्ची यूनानी रीति से करवाना तय किया गया। कुवरटीन ने खेलों के आयोजन की रूपरेखा बनाई। उसके कुछ सिद्धान्त व नियम बनाये, एक अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति बनाई, आई.ओ.सी को सर्व शक्तिशाली बनाया गया जो दिशा-निर्देश, संरक्षक व निर्णय करने वाली समिति थी। यह ओलम्पिक मूवमेंट की सर्वोच्च निकाय है।

ओलम्पिक आदर्श (Olympic Ideal)

ओलम्पिक में जरूरी बात विजय प्राप्त करना नहीं, इसमें भाग लेना आवश्यक है। जीवन में सबसे बड़ी बात विजय नहीं परन्तु संघर्ष है। सबसे जरूरी बात विजय पाने की कल्पना ही नहीं बल्कि अच्छी तरह से मुकाबला करना है।

अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के उद्देश्य (Aim of International Olympic Committee)

(1) खेलों का आधार बनाने वाले शारीरिक और नैतिक गुणों को बढ़ाना या विकास करना।

(2) युवाओं को खेलों के माध्यम से शिक्षित कर उनमें अच्छी समझ व मैत्री की भावना पैदा करना ताकि एक शान्ति पूर्ण व अच्छे विश्व का निर्माण हो सके।

(3) ओलम्पिक सिद्धान्तों को सारे विश्व में फैलाना ताकि अन्तर्राष्ट्रीय सौहार्द भावना, मैत्री की भावना पैदा हो।

(4) विश्व भर के खिलाड़ियों को हर चार वर्ष के बाद खेल महोत्सव (ओलम्पिक गेम्स) के माध्यम से एक साथ लाना।

ओलम्पिक भावना (Olympic Spirit)

अन्तर्राष्ट्रीय औलम्पिक समिति ने कहा है ''विश्व के युवाओं में औलम्पिक भावना को प्रोत्साहित करना और जनता के लिये एक कार्यक्रम देना एवं एमच्योरियम के दर्शन को महत्व देना, राष्ट्रीय औलम्पिक समिति को यह ध्यान में रखना होगा कि वह खेलों के प्रदर्शन और नये रिकार्ड का नहीं बल्कि एमच्योर खेलों के सामाजिक, शिक्षा, सौंदर्य, नैतिक और अध्यात्मिक मूल्यों पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित करें।''

ओलम्पिक आदर्श वाक्य (Olympic Motto)

औलम्पिक का आदर्श वाक्य हैं-

Citius	Altius	Fortius
सिटियस	अल्टियस	फोर्टियस
Faster	Highest	Stronger
तेज	ऊँचा	शक्तिशाली

ओलम्पिक ध्वज (Olympic Flag)

अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति द्वारा दो प्रकार के ध्वजों का प्रयोग किया जाता है।

(1) ओलम्पिक ध्वज (2) ओलम्पिक समारोह ध्वज

1. **ओलम्पिक ध्वज** – सन् 1914 में पियर डी कुर्वटिन के सुझाव पर ओलम्पिक ध्वज बनाया गया। ओलम्पिक ध्वज को सर्वप्रथम 1920 के एटर्वप (वेल्जियम) खेलों में फहराया गया। ध्वज सिल्क का बना होता है। जिसका आकार 2 मीटर × 3 मीटर होता है। छल्लों का माप 60 cm. 206 मीटर होता है। ध्वज के बीच में पाँच रंग के पाँच छल्ले एक दूसरे से जुड़े होते हैं। ये डब्ल्यू के आकर में बने होते हैं। जो मैत्री भावना के प्रतीक हैं। इन छल्लों का रंग नीला, पीला, काला, लाल व हरा होता है जो पांच महाद्वीपों को प्रदर्शित करते हैं। लाल रंग आस्ट्रेलिया, हरा रंग यूरोप, पीला रंग एशिया, नीला रंग अमेरिका और काला रंग अफ्रीका का प्रतिनिधित्व करता है। नीला रंग का छल्ला ध्वज ध्रुव के निकट बांई और सबसे ऊपर होता है। पीला व हरा रिंग अन्य रिंगों के नीचे होते हैं। रिंगों के नीचे सिटियस, अल्टियस, फोर्टियस लिखा होता है। यह झंडा ओलम्पिक खेलों के दौरान फहराया जाता है।

2. **ओलम्पिक समारोह ध्वज** – यह भी सिल्क का बना होता है। यह पाँच महाद्वीपों के पाँच रंगों नीला, पीला, काला, हरा व लाल रंग से सीमांकित होता है। यह फहराया नहीं जाता बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के अध्यक्ष द्वारा समापन समारोह के अवसर पर शहर के मेयर को सौंप दिया जाता है, जहाँ अगले ओलम्पिक होने होते हैं।

एशियाई खेल (Asian Games)

1930 के शुरू में प्रो. जी.डी. सोंधी व तथा पटियाला के महाराजा यादवेन्द्र सिंह ने ओलिम्पक खेलों की तरह एशियन खेल आयोजित करने का विचार प्रस्तुत किया। शुरू में इन्होंने पश्चिम एशियाई देशों के लिये प्रतियोगिता करवाने की कल्पना की। फरवरी 1934 में पहले पश्चिम एशियाई खेल ईरवन एमपिहितेर (Irwin Amphitheater) वर्तमान में राष्ट्रीय स्टेडियम, जो इंडिया गेट दिल्ली के सामने है – में हुये। जिसमें भारत के अलावा अफगानिस्तान, सियोल व पेलंस्टीन ने भाग लिया।

पंडित जवाहर लाल नेहरू की प्रेरणा से सन् 1948 ई. के लन्दन ओलम्पिक खेलों में भारत के अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक संघ के सदस्य प्रो०जी०डी० सोंधी ने लन्दन के माउन्ट रायल होटल में एशियाई देशों के कुछ चुने हुए खेल अधिकारियों को आमन्त्रित किया। इस सभा में चीन, बर्मा, श्रीलंका, भारत, फिलीपीन्स, कोरिया तथा इन्डोनेशिया आदि देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सभा में एशिया देशों के पारस्परिक सम्बन्धों को सुधारने एवं एकजुट बने रहने के अतिरिक्त एशियाई खिलाड़ी अपनी खेल प्रतिभा एवं कौशल के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों से तुलना कर मूल्यांकन कर सकें। इस विषय पर मंथन किया गया। इसके लिये एक एशिया एथलेटिक्स संघ की स्थापना की पेशकश की। सभी सदस्य देशों के प्रतिनिधियों ने सोंधी के सुझावों को स्वीकार कर लिया व तय किया गया कि अगली बैठक दिल्ली में आयोजित होगी।

13 फरवरी सन् 1949 को नई दिल्ली में यह सभा आयोजित की गई जिसमें अफगानिस्तान, बर्मा, श्रीलंका, भारत, इण्डोनेशिया, नेपाल, पाकिस्तान, फिलीपीन्स तथा थाईलैण्ड ने भाग लिया। बैठक में एशियन एथलेटिक्स संघ का नाम बदल कर एशियन गेम्स फेडरेशन रखने का निश्चय किया गया व संघ संविधान का निर्माण हुआ। जिसमें यह खेल ओलम्पिक खेलों के समापन के दूसरे वर्ष अर्थात् 4 वर्ष के अन्तराल में कराये जाने का निर्णय हुआ। इन खेलों का आदर्श सदैव आगे (Ever on word) माना गया।

प्रथम एशियाई खेल 4 से 11 मार्च सन् 1951 ई. में नई दिल्ली के नेशनल स्टेडियम में आयोजित हुए जिसमें 10 खेलों में 11 देशों ने भाग लिया। इसके पश्चात् एशियाई खेलों के आयोजनों का विवरण निम्न प्रकार है:–

क्र.सं.	वर्ष	शहर	देश
1.	1951	दिल्ली	भारत
2.	1954	मनीला	फिलीफन्स
3.	1958	टोक्यो	जापान
4.	1962	जर्काता	इन्डोनेशिया
5.	1966	बैंकाक	थाईलैण्ड
6.	1970	बैंकाक	थाईलैण्ड
7.	1974	तेहरान	ईरान
8.	1978	बैंकाक	थाईलैण्ड
9.	1982	दिल्ली	भारत
10.	1986	सियोल	उत्तरी कोरिया
11.	1990	बीजिंग	चीन
12.	1994	हिरोशिमा	जापान
13.	1998	बैंकाक	थाईलैण्ड
14.	2002	पुसान	दक्षिण कोरिया

15.	2006	दोहा	कत्तर
16.	2010	गॉनझाऊ	चीन
17.	2014	इनचीयोन	साउथ कोरिया

एशियाई खेलों के उद्देश्य (Aims of Asian Games)

1. एशिया महाद्वीप के लोगों को इकट्ठे करके उनको खेल के मैदान में लाकर एक दूसरे के निकट लाना था।
2. एशियाई खिलाड़ी अपनी खेल प्रतिभा एवं कौशल को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर से तुलना कर मूल्यांकन कर सके।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. ग्रीस के बहुत से शहरों में एथलैटिक्स उत्सव मनायें जाते थे। जिनमें सबसे प्रसिद्ध ओलम्पिक उत्सव था जो भगवान जीयस के सामने मनाया जाता था।
2. ओलम्पिक ध्वज के बीच में पांच रंग (नीला, पीला, काला, लाल व हरा) के छल्ले एक दूसरे से जुड़े होते हैं ये मैत्री भावना के प्रतीक हैं।
3. प्रथम ऐशियायी खेल 4 से 11 मार्च 1951 को भारत के दिल्ली शहर के नेशनल स्टेडियम में आयोजित हुए।
4. ऐशियाड खेलों का मुख्य उद्देश्य एशिया महाद्वीप के लोगों को इकट्ठा करके उनको खेल के मैदान में लाकर एक दूसरे के निकट लाना था।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न

1. प्राचीन काल में विज्ञान, दर्शन, खेल व शारीरिक शिक्षा में अग्रणी देश रहा है-
   (अ) अमेरिका (ब) रुस
   (स) यूनान (द) इटली ( )
2. प्राचीन ओलम्पिक खेलों का आरम्भ हुआ था -
   (अ) 776 ई.पू. (ब) 425 ई.पू.
   (स) सन् 1860 (द) सन् 1920 ( )
3. प्रथम एशियन खेलों का आयोजन हुआ था -
   (अ) श्रीलंका (ब) भारत
   (स) पाकिस्तान (द) बर्मा ( )

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. तेरहवें एशियाई खेलों का आयोजन कब व कहाँ हुआ था?
2. ओलम्पिक समारोह ध्वज में कितने रंग होते हैं?
3. ओलम्पिक खेल कितने वर्ष पश्चात होते हैं?
4. एशियन खेलों के क्या उद्देश्य हैं?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. ओलम्पिक खेलों पर प्रकाश डालिये।
2. एशियन खेलों का आयोजन अब तक कहां-कहां किया गया?

प्रोजेक्ट वर्क (Project Work)

XVI एशियाई खेल, गोन्जोऊ, चीन 2010 पर एक विस्तृत प्रोजेक्ट तैयार करो।
संकेत (Hints) :

(i) इस अध्याय से मदद लें।
(ii) महान खिलाड़ियों और वरिष्ठ पत्रकारों से जानकारी प्राप्त करें।
(iii) इंटरनेट के माध्यम से ढूंढें।

केस स्टडी (Case Study)

आधुनिक ओलम्पिक खेलों पर एक केस स्टडी तैयार करें। संकेत (Hints) :

(i) शारीरिक शिक्षक से पूछताछ कीजिए।
(ii) किताबों और पत्रिकाओं से सूचनाएं इकट्ठी करने की कोशिश करें।
(iii) पुस्तकालय और इंटरनेट पर ढूंढें।

उत्तरमाला

1. स 2. अ 3. ब